पी एम लाड

मुश्किल में परिन्दे

इस महीने की 5 तारीख को पर्यावरण दिवस पड़ता है। यह एक दिन है जब हम सोचें कि हमारे आसपास के जीवों, पेड़-पौधों की सेहत कैसी है। इसलिए भी कि इनके दुरुस्त रहने से हमारी दुरुस्ती भी जुड़ी है। एक ऐसी दुनिया की कल्पना करो जिसमें हमारे अलावा न तो कोई जीव होगा, न पेड़-पौधे।

इस एक दिन हमें इत्मीनान से सोचना है कि हमारे किसी काम से हमारे आसपास को, हमारे पर्यावरण को कोई नुकसान तो नहीं पहुँच रहा।

भुजंगा या कोतवाल

यूँ तो जल-थल के हज़ारों जीव हमारी कुछ गतिविधियों के कारण मुश्किल में हैं। पर मैं इस बार छह बहुत ही आम परिन्दों के बारे में बात करूँगा। तीन ऐसे जो इंसानी गतिविधियों के कारण खत्म हो रहे हैं। और तीन वे जो फल-फूल रहे हैं क्योंकि उन पर हमारी गतिविधियों का प्रभाव बहुत ही कम पड़ रहा है।

संकट में परिन्दे

पहले तीन-चार वे परिन्दे जो संकट में हैं। समय रहते हम अगर नहीं चेते तो शायद हमारे पास इनके फोटो ही रह जाएँगे। ये परिन्दे हैं – गौरैया, मोर, भुजंगा। इसी कॉलम में हम पहले सारस और खरमौर के बारे में भी बात कर चुके हैं।

गौरैया (नर)

गौरैया (मादा)

गौरैया हमारे घरों में या उसके आसपास रहती है इसलिए हमारी गतिविधियों का उस पर सीधा असर पड़ता है। गौरैया प्रमुख रूप से अनाज ही खाती है। इसके बच्चे लगभग पन्द्रह दिनों में ही उड़ने लगते हैं। इसके लिए वह उन्हें कीड़े-मकोड़ों का भोजन देती है। कीड़े-मकोड़े खाने से उन्हें पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन मिल जाता है। फसलों में तथा घरों में भी हम तरह-तरह के कीटनाशकों का छिड़काव करते हैं। ये कीटनाशक कीड़ों के माध्यम से गौरैया तक पहुँचते हैं और कई बार उसकी मौत का कारण बनते हैं।

बचपन में मैं अकसर देखता था कि आँगन में सूखते अनाज पर गौरैयों के झुण्ड आ बैठते थे। आजकल हमारे भोजन से जुड़ी कई चीज़ें डिब्बा बन्द मिलने लगी हैं। इसलिए आँगनों में गौरैया के लिए मिलने वाला भोजन अब लगभग खत्म हो गया है। यही हाल मोर और भुजंगा का भी है। हाल ही में मुरैना में सैंकड़ों की संख्या में मोर मृत पाए गए। वजह थी – कीटनाशक युक्त कीड़ों को खाना। खासकर कपास की खेती में इस्तेमाल होने वाले कीटनाशकों ने मोरों को बहुत प्रभावित किया है। भुजंगा का भोजन भी कीड़े-मकोड़े हैं। कीटनाशक कीड़ों को प्रभावित करते हैं और फिर यही मृत या जीवित कीड़े भुजंगा को।

खरमौर

तोते

कोयल (नर)

तोते, कोयल और फाख्ता तीन ऐसे पक्षी हैं जिन पर हमारी गतिविधियों का ज़्यादा प्रभाव नहीं पड़ा है। एक तो ये तीनों पक्षी कीड़े-मकोड़े नहीं खाते हैं। और तोते तथा कोयल ज़मीन पर बहुत कम ही बैठते हैं। फाख्ता अनाज खाती है। तोते और कोयल ऊँचे पेड़ों पर लगे ताज़े फल। इसलिए कीटनाशक इन तीनों से फिलहाल दूर हैं।

मोर

फाख्ता

सभी फोटोः पी एम लाड